मधुबन, ज्ञान सरोवर तथा शान्तिवन में चली हुई दादी जानकी जी की क्लासेज

1-11-16

''दुनिया में रहते, दुनिया से न्यारे रहो तो प्रभु के प्यारे बन जायेंगे, गैरन्टी है''

बाबा कहता है मन को मेरे में लगाओ, मन को बाबा में लगाने से बहुत खुशी होती है। खुशी जैसी खुराक नहीं। बाबा ने हमारी बुद्धि को निश्चय में ऐसा अचल अडोल बना दिया है। निश्चय बुद्धि विजयंती के अनुभव ने सारी लाइफ को कितना अच्छा बना दिया है। समझते हो अभी की यह जो हमारी लाइफ है, बाबा के हाथों में है! बेफिक्र बादशाह हैं। कल क्या होगा? गैरंटी है, अच्छा होगा। कल भी अच्छा ही हुआ था क्योंकि इतनी बुद्धि शुद्ध शान्त रहती है। दुनिया में रहते, दुनिया से न्यारे रहो तो प्रभु के प्यारे बन जायेंगे, गैरंटी है। ऐसा ज्ञान सिम्पल रहने का और कहीं नहीं मिलेगा।

अभी हम बाप समान बनें तो और भी जो भाई बहनें हैं, वो भी बन जायेंगे। और कोई कमी तो है नहीं, जब भी यहाँ बैठते हैं तो बहुत अच्छा लगता है। मन को बाबा में लगाकर बुद्धि को स्वदर्शन चक्रधारी बना दिया, मन बाबा में लगे, बुद्धि स्वदर्शन चक्र फिराती रहे, तो बुद्धि कहीं अटकेगी, लटकेगी, चटकेगी नहीं। बाबा की मुरली में जो शब्द आते हैं वो दिन भर में रिहर्सल करने के लिये हैं। बाबा से हमारा अच्छा प्यार है तो बाबा को क्या करें, यहाँ बिठायें या कहाँ बिठायें या बाबा के पास हम बैठ जायें। जब बाबा के दिल में बैठ जाते हैं तो औरों को यहाँ से बाबा दिखाई पड़ता है।

अपने लिये शुभ चिंतन, दूसरों के लिये शुभ चिंतक। अगर मेरा शुभ चिंतन है तो औरों को मेरा वो वायब्रेशन पहुँचता है। तो हमारा फर्ज कहता है, ऐसे ऑखों से रांग राइट का इशारा देना। जितना अच्छा कर्म करते हैं उसका फल अच्छा मिलता है। यह राइट है, यह रांग है, यह करना है, यह नहीं करना है, यह रोशनी होने के बावजूद भी अगर हमारे से रांग कर्म होते रहेंगे तो अन्त में बहुत पश्चाताप करना पड़ेगा। कर्म बड़े बलवान है, परमात्मा बाप सर्वशक्तिवान है।

4-11-16

''बाबा हम सबको इगोलेस, वाइसलेस बना रहा है, तो जब जरा भी इगो न हो तब कहेंगे वाह जिन्दगी वाह!

मैं तीन बारी ओम् शान्ति कहती हूँ माना मैं कौन, मेरा कौन, जब मैं कहती हूँ तो अन्तर्मुखी हो जाती हूँ। अन्तर्मुखी एकांतवासी। बाहरमुखी, बाहर की बातें देखना सोचना बोलना, वेस्ट ऑफ टाइम। साकार बाबा भी बहुत एकांत में रहते निश्चय बुद्धि से मैं कौन हूँ, मेरा कौन, इसी नशे में रहते थे। यह मैंने ऑखों से देखा है। हमारी दिल में यह बात लग गयी और आपके लिए भी मैं समझती हूँ कि सभी खुश रहो, आबाद रहो, न बिसरो न याद करो। सिर्फ एक भगवान को याद करना है। बाकी निमित्त मात्र प्रवृत्ति में रहते, सच्चाई, प्रेम, शान्ति, खुशी से जीना वो लाइफ है बहुत ऊंची। सच्चाई से शान्ति और प्रेम होने कारण हम राज़ी खुशी हैं। कभी भी कोई हमसे नाराज न होवे, न मैं किसी से नाराज़ होऊं। चलते-फिरते, खाते-पीते ध्यान रखना है मुझे क्या खाना है, क्या पीना है, क्या पहनना है। अभी आप सब यहाँ देख रहे हो क्या खाते हैं, क्या खिलाते हैं? जो बनाने और खिलाने वाले हैं, आप उसे खाने वाले हैं सब कितने प्यारे लगते हो। वातावरण बहुत अच्छा है। कोई भी बात होती है तो आवाज नहीं करेंगे, जितना आवाज से परे रहते हैं उतना अच्छा है क्योंकि आप यह जरुर बुद्धि में रखेंगे, जीवन में अब क्या करने का है? जीना है तो कैसे? मरना है तो कैसे? वो यहाँ से अच्छी तरह से देखके, सीखके जाओ

क्योंकि भगवान कहता है यह जो वर्तमान का जीवन है वो बहुत मूल्यवान है, इसकी वैल्यू बहुत है। समय की वैल्यू है, संस्कारों की वैल्यू है। इसमें जो श्वांस संकल्प चलते हैं उसमें भगवान की याद रहे, तो गैरण्टी है - अन्त मते अच्छी होगी। सबको गैरण्टी है कि मैं मरुंगी तो कैसे... ठीक है ना, क्योंकि सब मुझे शुरू से देखते जानते हैं, मैं बहुत अच्छा शरीर छोडूँगी। जितना ऐसे सत्संग में रहेंगे उतना अच्छा है, क्योंकि जैसा संग वैसा रंग, जैसा पानी वैसी वाणी, जैसा अन्न वैसा मन। तो यहाँ देखेंगे अन्न जो पेट में जाता है वो मन अच्छा रखता है। संग अच्छा है जितना दिन यहाँ रहें, आप देखेंगे और कोई बात करना कोई जानता ही नहीं, दुनिया वाले मनुष्य पता नहीं क्या क्या बातें करते रहते हैं, हम खुश रहते हैं और जो कोई यहाँ बाबा के घर में आते हैं, वो खुश रहें। तो खुश रहने में बहुत फायदा है।

अभी समय अनुसार परमात्मा अधर्म का नाश, धर्म की स्थापना अर्थ हम बच्चों से सत्धर्म की स्थापना करा रहा है। सच्चाई हमारा धर्म है। बाबा ने यज्ञ रचा है, जिस यज्ञ में हम खाते हैं और ज्ञान सुनते हैं।

बाबा, मुरली, मधुबन यह तीन बातें इतनी अच्छी हैं, निराकार शिव साकार बाबा द्वारा कैसे मुरली सुनाता है, मुरली क्यों कहते हैं? बाबा के मुख से जो महावाक्य उच्चारण होते हैं, वो एक-एक महावाक्य हमारी उन्नति के लिए है। पहला है हे आत्मा अपने को पहचान, पवित्रता धारण कर। पवित्रता किसको कहा जाता है? 5 विकार काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार यह हैं नर्क का द्वार। सम्भालो इन पंच महाभूतों से क्योंकि यह बहुत खराब हैं। परमात्मा बाप हमको इतनी समझ दे रहा है इगोलेस, वाइसलेस बना रहा है। मान मिला तो खुश, जरा सा अपमान हुआ तो दु:ख, इसलिये जरा भी इगो नहीं हो तब कहेंगे वाह! जिन्दगी वाह! यहाँ व्हाई व्हाई नहीं कहा जाता। यहाँ से जो खुशी मिलेगी उसे कैसे ले जायेंगे! छिपाके ले जाओ, परन्तु यहाँ की खुशी छिपती नहीं है, चेहरा बता देता है क्योंकि सच्चाई के आधार से खुशी प्राप्त की हुई होती है।

यहाँ ऐसे गीत बजाते हैं जो मेरा जी चाहता है उठके नाचूँ...। बाप मिला सबकुछ मिला है, तो जो पुरुषार्थ करना हो अब कर लो। कल पर भरोसा नहीं है, साइंस की दुनिया की हालत देख रहे हो। हम तो पहले से ही साइलेंस में रहने के आदती हैं, अच्छा है। बाकी बाहर देखो दुनिया भर में कितना अधर्म है, पाप है, फिर भी वो डरते नहीं हैं। परन्तु भगवान कहते हैं बच्चे अभी समय थोड़ा है, तुम मेरे बच्चे हो, सच्चे बच्चे हो, सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे हो। अभी हमको खुशी है, सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे बनने की। तो जिसको भी यह खुशी चाहिए वो ले लो। सच्ची दिल से साहेब राज़ी, दूसरा हिम्मते बच्चे मददे बाप, तीसरी बात है अन्दर की नियत साफ है तो मुराद हांसिल होगी।

अभी हमारा तन जहाँ होगा ना, मन भी वहीं होगा। अभी हमको परमधाम में जाके फिर सुखधाम में आना है। यह जरूर सुनना है, अच्छी तरह से जानना है, इससे बहुत फायदा होगा। कहाँ जाना है? ऊपर माना जहाँ निराकार परामात्मा बाप रहता है, वहाँ से फिर सतयुग में आना है इसलिए अभी इस कलियुग में हमारा कोई काम नहीं है क्योंकि यहाँ है क्या? 5 विकार। यह हमको नहीं चाहिए। जरा भी अभिमान न हो। यह यहाँ अच्छी रीति चेकिंग करना है, कदम कदम में देखना है सच्ची कमाई हो। जो सही है वही करना है, इतना ध्यान रखो। इसके लिए ब्राह्मण बनना है, ब्राह्मण माना मन, वाणी, कर्म शुद्ध, श्रेष्ठ। जो कर्म मैं करेंगी मुझे देखके और करेंगे, इसका हम बहुत ध्यान रखती क्योंकि बाबा ने ध्यान रखवाया है। बाबा कहते बच्चे अटेन्शन रखो, टेन्शन से फ्री रहो। अटेन्शन यही है - जैसा कर्म करेंगे मुझे देख और करेंगे, यह भी नहीं, जो बाबा मेरे से अच्छा कर्म करा रहा है वो देख और करें तो दुआयें मिलेंगी। दुआ भले कितनी भी मिलें परन्तु यह अच्छी दवा है जो सच्चा रहना, अच्छे संग में रहना। सदा खुश रहना, कभी दु:ख का चेहरा न बनाना। थैंक्यू। ओम् शान्ति।

6-11-16

''जो चारों सबजेक्ट में फुल मार्क्स लेने वाले हैं वही खुशनसीब और खुशराज़ी हैं''

सभी प्यार से तीन बारी ओम् शान्ति बोलना। तीन बारी की ओम् शान्ति से सारे विश्व की सेवा हो गयी है। कितने ऐसे बच्चे हैं जो ओम् शान्ति से बने हैं। देखो दादी, कितना अच्छा संगठन है बाबा का। पहली बार इशू दादी हमारे साथ बैठी है, 3-4 दिन से मेरे साथ है। इनको भी कशिश हुई कि मैं भी डबल फॉरनेर्स से मिलके आऊं। मैं खुश हूँ, आज मुझे नाज़ हो रहा है कि दादी मेरे साथ है। साकार बाबा के समय यह हमेशा आफिस में साथ होती थी, बाबा कहता था विदेश के जो भी पत्र हैं वो सब इसको दे दो, तो वह सब पत्र मुझे देती थी क्योंकि उस समय विदेश में 2-4 परिवार ऐसे थे, जो बाबा को पत्र लिखते थे, उसमें भी हमारी दादी सावित्री, दादाराम, उनके कविता गोविंद अभी तक हैं। एक बारी बाबा सावित्री को कहता है कि राम अगर शरीर छोड़ दे तो तुम रोयेंगी? तो कहा नहीं बाबा। तो बाबा ने कहा आज तुम सबको टोली बांटो। सबसे पहले हाँगकाँग की सेवा इन्हों के द्वारा शुरू कराई। फिर लण्डन की सेवा भी इसी तरह से शुरू हुई। तो बाबा ने सारे विश्व में सेवा कराने के निमित्त बनाया। जो भी विदेश में हमको देखते रहे हैं उनको बाबा का अनुभव हुआ है। अभी यहाँ बैठे भी अनुभव है, स्वप्नों में भी संकल्प है सब बाबा को जानें, सब बाबा को याद करें। तो मेरे दिल, दिमाग में, दृष्टि में बाबा ही बैठा है। आज यहाँ बाबा के रूम में बैठी तो फिर से वह पुराने दिनों की यादें ताज़ी हुई।

अभी आप सब भी खुश राज़ी है ना। राज़ी खुशी माना चारों सबजेक्ट में फुल मार्क्स लेने वाले। वो ऑटोमेटिक खुशनसीब हैं। ऐसों को देख और आत्माओं की रूहानी सेवा आपेही होती रहती है। तो आप सब कितने मीठे, कितने प्यारे हैं... बाबा के दिल में बच्चे हैं और बच्चों के दिल में बाबा। तो दिल, दिमाग, दृष्टि तीनों अपना देखो, चेक करो। यह मेरे से फीलिंग आ रही है ना! क्या करूँ, बाबा ने कहा है तुमको बाप समान बनना है, इनको अभी आप समान बनाना है। तो सारा दिन रात बाबा समान बनने की चितविना है, चिंता नहीं है, अच्छा है इसलिये बाबा हमारे साथ है। बाबा साथ होने से साक्षी हो करके पार्ट प्ले करने की बाबा शक्ति दे रहा है। तो चाहे पाण्डव, चाहे शक्तियां उनको कहते हैं जो देह सहित देह के सम्बन्धों से न्यारे हैं। अटैचमेंट नहीं है, नष्टोमोहा स्मृर्तिलब्धा। स्मृति सदा ही मैं कौन, किसकी हूँ? यह स्मृति रहे तो स्वत: देही-अभिमानी स्थिति से बाबा साथी होकर रहता है। इससे लगता है कि बाबा कितना वन्डरफुल है, फिर बच्चे भी वन्डरफुल हैं। अच्छा।

8-11-16

''हम सभी तीनों लोकों के मालिक, बेफिक्र बादशाह हैं, मुफ्तलाल कम्पनी में बैठे हैं चिंता किसकी करें, क्यों करें, क्या चिंता करें!''

यहाँ ओम् शान्ति भवन में आने से बहुत खुशी होती है, बाबा तेरा प्यार बताया नहीं जाता है। किसको कैसे बताया जाये कि मेरा बाबा है क्योंकि वन्डरफुल है बाबा। फिर सारे चक्र में, 5 हजार वर्ष में ऐसा भाग्य नहीं होगा। यह बड़ा भाग्य है। बाबा साथ है और संगठन से वायब्रेशन का जो फायदा है ना, उससे भी बहुत खुशी होती है। यहाँ यह जो संगमयुग का मिलन है वह बहुत वैल्यूबुल है। सभी को खींच होती है इस मिलन की, हम एक दो को देखकर के कितना खुश हो जाते हैं। किसी ने मुझे कहा कि आज ऐसी बातें बताओ जो हमें पुरुषार्थ में मेहनत नहीं करनी पड़े। ऐसा पुरुषार्थ हो जो सहज हो जाये। कोई चिंतन नहीं है, कोई फिकर नहीं है। तीनों लोकों के मालिक, बेफिक्र बादशाह हैं हम। किसी को कोई फिकर तो नहीं है ना! है? जिसको कोई फिकर हो तो आज मुझे दे देवे। फिकर काहे का! मुफ्तलाल कम्पनी में बैठे हो। चिंता किसकी करें, क्यों करें, क्या चिंता करें? सारे संसार में देखो कोई हमारे जैसा आप जैसा बेफिक्र रहने की बादशाही ले रहे हैं। अभी हमारी यही इच्छा है,

प्रैक्टिकल लाइफ है जो बाबा हमको ले जाने के लिये सूक्ष्मवतन में बैठ गया है इसलिये कोई भी ऐसा कर्म न करो जो रूक जाओ। अपने कर्म पर ध्यान दो, कर्म हमारे से ऐसे हों जो दूसरा भी देख करके वो भी भले कर लेवे। मुझे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। अच्छा।

9-11-16

''मेरी भावना है कि बाबा ने जो भासना दी है वह सभी ले लेवें, सभी धारणाओं में ऐसे पक्के हो जाएं जो कोई भी बात की मिसिंग महसूस न हो'' (डबल विदेशी भाई बहनों के साथ)

पूरे संसार में किसी भी भाषा में ओम् शान्ति की ट्रांसलेशन करने की जरुरत नहीं होती है इसलिये मैं 3 बारी ओम् शान्ति कहलवाती रहती हूँ। मेडिटेशन हॉल में ही डबल फॉरेनर्स का आना शुरू हुआ है। बाबा बहुत होशियार है, ऐसे बाबा को देखके जो मुस्कराना सीखे हैं वो हाथ उठाओ। मुझे सेवा का गुप्त नशा है, निश्चय तो बाबा का है। मुझे कोई भाषा भेद, धर्म भेद नहीं है, बाबा ने सब भेद मिटा दिया। और एक बात कि कोई भी बात रिपीट नहीं करनी है। बाबा ने जो भासना दी है वो भासना सभी ले लेवें। भासना माना मेरी भावना है कि बाबा ने मेरे को जो भासना दी है वो ले लो। आप लोग निमित्त बने हो सारे विश्व को साथी बनाने के। इतने आप प्यारे हो, जो आपके कारण मुझे इतना प्यार मिला है, बाबा और दादियों का।

कोई ज्ञान की धारणाओं में अच्छे पक्के होते रहें तो बाबा से मिसिंग नहीं लगेगी। मैंने तो कोई भी ज्ञान की बातें न नोट की है, न ही रिपीट की हैं क्योंकि बाबा कहता था डायरेक्ट सुनो, टचिंग को कैच करते रहो और साथ में सेवा करते रहो। सारे ज्ञान का सार ऐसे सुनो सुनाओ जो वो आप समान बना दे। मुझे बाप समान बनना है फिर औरों को अपने समान बनाना है। मुझे पता थोड़ेही था मैं इतना जिंदा रहेंगी और विदेश की इतनी सेवा करेंगी। जिसकी रचना इतनी सुन्दर वो कितना सुन्दर होगा।

जो सदा ही बाबा को याद करने वाले बच्चे हैं उनको और कुछ याद आता नहीं है। कोई बात कल की आज की, कहाँ की बात भी याद नहीं है, तो बाबा सहज स्वत: अपनी याद दिलाता है मैं कौन हूँ? मेरा कौन? मैं हूँ आत्मा, मेरा है परमात्मा, यह कोई घड़ी भी भूलता नहीं है, नेचुरल याद हो गया है। इसमें बाबा कहता है बाप समान बनना है फिर आप समान बनाना है, यह सेवा का विषय भी पढ़ना है। अभी आप बताओ ऐसे आप समान कौन बने हैं? बाप समान कौन बना है? संगम का समय बहुत थोड़ा है। जब से शिवबाबा के बने हैं तब से बाबा को पहचान करके बैठे हैं। भले अभी के आये हुए हैं परन्तु क्वालिटी हैं क्योंकि बाबा का ज्ञान ही ऐसा बहुत अच्छा है, सहज भी है। बाबा की मुरलियों से बहुत रोशनी मिलती है, बाबा, मुरली, मधुबन। बाबा ने सच्चा प्यार करना सिखाया है।

दूसरी बात पहले तो बाबा के ही पैसे से ही भण्डारा चलता था फिर जब बाहर से थोड़ा पैसा आने लगा तो बाबा ने कहा अभी रोज़ के भोजन का भोग लगाके खाना, तब से यह सिस्टम शुरू हुआ। बहुत अच्छा लगता था वो सीन। अभी भी जब शान्त होती हूँ तो कोई संकल्प नहीं आता है। कोई भी आयेगा मिलने के लिये, मैं ऐसे करके (दृष्टि से) मिलती हूँ। ओके. ओम् शान्ति।

11-11-16

''बाबा को जीहजूर कहना माना सर्वगुण सम्पन्न बनना, सबके गुण देखते रहो तो वह गुण स्वयं में आ जायेंगे''

जिन ब्राह्मणों को फरिश्ता बनना है, उन्हें सिम्पल और सदा खुश रह करके सहनशीलता का गुण धारण करना है, इससे कभी मूड ऑफ नहीं होती है। यह पढ़ाई और पालना ऐसी है और प्रैक्टिकल लाइफ ऐसी है जो एक दो को देख उमंग आ जाता है। यह पढ़ाई बहुत अच्छी है, सिम्पल भी है इसलिए पढ़ाई से प्यार हो क्योंकि इससे बहुत सुख पाया है। अगर नियत साफ है तो जो संकल्प करेंगे वो हो जायेगा, कोई बड़ी बात नहीं है। कोई सेवा मेरे अर्थ है, किसी के मन में आती है तो हम सदा हाँ जी, जीहज़ूर कहते हैं। अगर मैं बाबा को जीहज़ूर कहती हूँ तो आपको क्या बोलेंगे - जीहज़ूर। बाबा भी क्या कहेगा - जीहज़ूर क्योंकि जीहज़ूर कहना माना सर्वगुण सम्पन्न बनना। सबके गुण देखते-देखते वो गुण मेरे में आ गये, तो यह बड़ी अच्छी बात हो गयी। और अगर किसी का अवगुण देखेंगे तो वो भी मेरे में आ जायेगा इसलिये मीठै बाबा ने समझाया और सिखाया है, तुम्हारा बाप कैसा है? मेरा बाप मीठा है, प्यारा है, शिवबाबा भोला भगवान है।

ब्रह्माबाबा को भी देखो तो कितना अच्छा लगता है, दिल कहता है बाबा तुम्हें देखता रहूँ...। बाबा भी यही चाहता है कि बच्चे मुझे देखते रहें। अभी हम आपस में एक दो को देख रहे हैं तो क्या देख रहे हैं? मैं कौन, मेरा कौन... ऐसे ही देख रहे हैं ना, इससे कुछ भी हो जाये, मेरा बाबा कैसा है! जहाँ हमारा मन है, वहाँ हमारा तन है... यह जो गीत हैं देश विदेश में बजते रहते हैं। जो रसमरिवाज़ भारत में है वही विदेश में है। जो विदेश में है वही भारत में है। हर एक की लाइफ स्टाइल से लगता है यह ब्रह्माकुमार है। कोई कहाँ भी रहते परन्तु सूक्ष्म रूहानी स्नेह है। स्वमान में रहना, सबको सम्मान देना यह एक बहुत अच्छी आदत है। चारों सबजेक्ट में फुल मार्क्स लेने के लिये बाबा के प्यारे हैं, दिल के दुलारे हैं, ऑखों के तारे हैं। ओम् शान्ति।

12-11-16

''सदा खुश रहना और सबको खुशी बांटना, इसमें ही बहुत खुशी समाई हुई है''

बाबा ने खींच-खींच करके चारों तरफ से यहाँ आप लोगों को बुलाया है, तो आपकी वेलकम करने के लिये थोड़ा समय आज मिला है। जैसे दो दिन पहले मैं पाण्डव भवन और ज्ञानसरोवर में थी, बहुत अच्छा लगा। अभी यहाँ थोड़ा दिन हैं, बाबा आयेगा फिर देखना वन्डरफुल। सब बाबा को याद कर रहे हैं, कितना दिन है बाबा को आने के, आया कि आया। तब तक हम आपस में बाबा का आह्वान कर रहे हैं। सभी मिल करके मैं कौन, मेरा कौन, तीसरा क्या कर रहे हैं? बाबा का आह्वान कर रहे हैं आया कि आया। यह वन्डरफुल गुल्जार दादी का भी पार्ट है, वो परोक्ष बाबा का साक्षात्कार कराने वाली है, मैं क्या करूँ? बताओ। मैं कहती हूँ सभी मिलके बाबा को याद करें, सभी से मिलने में मुझे बहुत ही अच्छा लगता है।

मेरा बाबा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा, सेवा कराने वाला बाबा, शुक्रिया बाबा। जब मैं आप लोगों से मिलती हूँ तो मुझे बहुत खुशी होती है। खुश रहना, खुशी बांटना। मेरे रथ को बाबा ने क्यों रखा है? सेवा के लिये! सेवा यही है कि मुँह दिखाना कि बाबा कैसा है, वह अनुभव कराना। जो भी मुझे देखता है तो मुझे भावना है, बाबा ने हमको जो प्यार दिया है, बाबा मेरे साथ होने से प्यार का अनुभव होता है, ऐसे सबको होता रहे। अच्छा।

13-11-16

''देवता पीछे बनेंगे, अभी शान्ति सुख का दाता बनना है, एक दो को सहयोग देना माना दाता बनना''

ओम् शान्ति, कितने अच्छे, कितने मीठे, कितने प्यारे, कौन हैं, बाबा या बच्चे! बाबा को हम क्यों याद करते हैं? मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा मिल रहा है। मुक्ति पहले फिर जीवनमुक्ति। पुरानी दुनिया के जो भी संस्कार हैं उन सबसे मुक्ति हो गयी। जितनी प्यार भरी बाबा की समझानी मिलती है, उससे अपने कर्म ऊंचे महान होते हैं। संगम का यह समय कितना बलवान है, जो अभी हमको मिला है, इससे कितना बल मिलता है। निर्बल से लड़ाई है बलवान की। अभी कोई को भी निर्बल नहीं रहना है क्योंकि स्वयं को पहचाना है, संगम के समय को भी पहचाना है। सर्वशक्तिवान बाबा मेरा है, मैं बाबा की हूँ, यह जो हमारा अन्दर का आवाज़ है - मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा।

मैं तो सब बातों से मुक्त हूँ परन्तु बाबा कहता है नहीं, मुक्ति हुई है, जीवनमुक्ति क्या है, उसका अनुभव करने के लिये यह जीवन जीना है। पुरानी बातें, पराई बातें सोचने का अक्ल नहीं है। कोई कहता भी है तो भी याद नहीं आता है। इतने अच्छे-अच्छे बाबा के अनन्य बच्चों को देख कितनी खुशी होती है। हरेक बाबा का बच्चा खुद तो बना पर कइयों को आपसमान बनाया है। जिन्होंने आप समान बनाया है वो बाबा समान जरुर अन्दर में बने होंगे। बहुत धीरज से शान्त रह करके वह ऐसी सेवा कर सकते हैं। बाबा के बच्चे इतने पैदा हो गये हैं जो यह डायमण्ड हॉल भी छोटा पड़ने लगा है। इतने सब बाबा के बच्चों को देख बहुत खुशी हो रही है। बाबा जो सुनाता है या बाबा की पढ़ाई जो ध्यान से पढ़ते हैं, वह उनकी चलन से दिखाई देती है। सच्ची दिल है तभी बाबा कहता है तुम मेरी बच्ची नहीं हो, साथी हो। तो मैं कितनी भाग्यवान हूँ क्योंकि भगवान कहे तुम मेरा साथी हो। ऐसा नशा किसको चढ़ा हुआ है, भगवान खुद साथी बना करके सहजयोगी बना दिया है। साथी वो बना है तो ऐसे साथी को क्या करेंगे? सच्ची दिल से उसको राज़ी रखेंगे। जितना बाबा को देखेंगे, उतना हमें लगता है बाबा ने मुझे अपना बनाके एकदम मुस्कराना सिखा दिया।

भगवान खुद निराकार है, उसने ब्रह्मा बाबा में प्रवेश हो करके बच्चे पैदा किये और हमको खुशी है कि शिवबाबा भोलानाथ भण्डारी ने कैसे बाबा को अपना बनाकरके इस यज्ञ की नींव डाली। मुरली तो बाबा की कितने साल डायरेक्ट सुनी, अभी भी मैंने कभी भी कोई मुरली मिस नहीं की है क्योंकि मुरली में खुदाई जादू है, जिसने क्या से क्या बनाया है। परन्तु और भी हमको देख करके बनें, यह खुशी बहुत है। कहते हैं ऑखों देखी बात पर विश्वास होता है। सुनी-सुनाई बातें तो नहीं हैं ना! बाबा ने जो सुनाया वो जीवन में ऐसा हो जो सुनने वाले की जीवन ऐसी बन जाये। बाबा के कदम पर कदम चलने से पदम जमा किये हैं, सन शोज़ फादर है। तो मैं बेटी नहीं हूँ, बच्चा हूँ। बच्चे का हक लगता है। कोई भी कारण से कुछ भी हो जाये, हमारा काम है सच्चाई से काम लेना।

बाबा का भण्डारा भरपूर है, जैसा अन्न वैसा मन। सारे कल्प में बाबा ऐसे नहीं खिलायेगा, अभी खिला रहा है, सुना भी रहा है। कैसा भी शरीर है लेकिन बाबा बाबा करके खुश रहता है। खुशी जैसी खुराक नहीं। खुशी बड़ी ताकत देती है और कोई बात की चिंता नहीं करनी है। न चिंतन, न चिंता...। अपने दिल से बीच-बीच में पूछो क्या चाहिए? दिल की बात गुड़ जाने गुड़ की गोथरी जाने, यह कहावत भी प्रैक्टिकल है। तो बाबा ने इतना गुप्त प्यार दिया है, शक्ति दी है, बाबा इतना प्यार करे और मैं उस प्यार का सबूत न दूँ, तो क्या कहेगा! कई हैं

जिनके साथ रहे हैं और कई हमारे साथ भी रहे हैं, तो एक दो को सहयोग देना माना दाता बनना। यह भी नेचुरल है, देवता पीछे बनेंगे, अभी शान्ति सुख का दाता बनना है। तो हमें ऐसा बनना है जो सच्ची दिल पर साहेब राज़ी रहे तो क्या करेगा काज़ी इसलिये बाबा ने राजयोगी के साथ कर्मयोगी भी बनाया है। सहजयोगी सो सदा सहयोगी बनाया है। सहयोग इतना अच्छा मिलता है, जो हमें कोई भी बात से न मुश्किलात हुई है, न होगी। तो मैं बाबा से पूछती हूँ, बाबा अभी तक मुझे क्यों रखा है? कोई भी बतावे क्यों रखा है! तो मैं ही कह देती हूँ, बाबा ने मुझे इसलिये रखा है - मेरा बाबा कैसा है वो अनुभव कराने के लिये।

कुछ भी हो जाये, सहनशक्ति साथ दे रही है। कभी भी मैंने किसी की न कम्पलेंट की है, न करती हूँ। तो इससे बहुत खुशी रहती है और बाबा का प्यार ऐसा पवित्र बनाता है जो शान्तिधाम, सुखधाम की याद स्वत: रहती है। अभी बाबा के मिलन का यह जो सुख है ना, बड़ा अच्छा है।

हरेक को यह नशा है कि मैं बाबा की हूँ, तो कोई बात मुश्किल नहीं है। मैं तो कहती हूँ वाह रे बाबा वाह! और हम भी कहते हैं वाह रे भाई! ओम शान्ति।

17-11-16

''बाबा की पालना से श्रेष्ठ कर्म करने की हॉबी (आदत) बन गई है, अब सावधान रह विकर्म विनाश करने हैं, कर्मो पर पूरा ध्यान देना है''

जब हम याद में बैठते हैं तो याद में क्या टचिंग आयी वो सुनाना चाहिए ना। अभी इसमें अपने आपको साक्षी हो करके देखते हैं, मन कहाँ और जगह तो नहीं है? तन यहाँ है तो मन भी यहाँ ही होना चाहिए क्योंकि अभी इस डायमण्ड हॉल में बाबा के बच्चे और हम आपस में बहन भाई बैठे हैं। इतना अच्छा बहन भाई का रिश्ता जो सारे कल्प में नहीं मिलेगा। भले दुनिया की क्या भी हालातें हैं, कोई भी चिंतन में कोई है पर हम खुश हैं, चिंतन करना जानते ही नहीं हैं। दुनियावी बातों का चिंतन करने में वायुमण्डल अच्छा नहीं होता है। तो बाबा ने हम सबको निश्चिंत रहने और निश्चय बुद्धि से विजयी रत्नों की लाइन में खींच लिया है ऐसा महसूस करते हो ना। निश्चय बुद्धि, निश्चिंत रहने में कितनी अच्छी जीवन है! सतयुग में तो चलो बने बनाये होंगे, अभी संगमयुग की महिमा है, यह समय बहुत वैल्यूबुल है। समय को देखो और स्वयं को देखो, बाबा भी हमें देख रहा है। समझो मैं अकेली हूँ तो भी एम है शान्त में रहना है, परन्तु अगर 10-15 लोग हो जाते हैं तो बहुत अच्छा लगता है, सभी मिल करके शान्त में बैठ जाते हैं। यहाँ (क्लास में) टाइम पर आने में अच्छा लगता है क्योंकि यह दिन अति प्यारे हैं जब शिवबाबा साथ हमारे हैं। हम सब ऐसे संगठन में शान्ति से बाबा को याद करते रहें तो बाबा को कितना अच्छा लगता होगा।

मीठा बाबा, प्यारा बाबा... बाबा ने न्यारे बनने की बड़ी अच्छी सुत्ती पिलाई है। न्यारा बनना इज़ी है ना, न्यारे बनने से बहुत फ्री हैं। यह दिल, दिमाग, दृष्टि हरेक अपनी देखे। दिल दिलाराम से है तो सुख शान्ति अच्छी तरह से अपना काम करती है। अकेले बैठे हैं या संगठन में बैठे हैं या सारे विश्व के साथ बैठे हैं तो भी समझो यह वायब्रेशन जा रहे हैं। यहाँ आधा-पौना घण्टा एक्यूरेट शान्त में रहने की जो प्रैक्टिकल विधि है, यह हमारा जैसे एक शान है। यहाँ बैठे कहाँ भी बुद्धि नहीं जाती क्योंकि एकाग्र बुद्धि से विकर्म विनाश करने का अटेन्शन है। जब से बाबा के बने हैं तो बाबा ने ऐसी पालना दी है जो श्रेष्ठ कर्म करने की हॉबी (आदत) बन गई है। कर्मों पर सावधान रहना है। बाबा ने जो नॉलेज दी है साक्षी हो रहने की, वह बड़ी अच्छी और सिम्पल है। मैं तीन बारी ओम् शान्ति दिल से कहती हूँ, मैं कौन, मेरा कौन...। मैं तो यहाँ देखती हूँ, मेरा ऊपर वाला है। मैं लाइट, लाइट ऊपर वाले की

माइट फिर कर्म को देखो तो जरुर अटेन्शन रहेगा। तो बाबा मेरा साथी है और साक्षी होकरके पार्ट प्ले करने की जो नॉलेज मिली है वह बहुत सुखदायी है, फ्री हैं। क्योंकि मैं जब भी यहाँ आती हूँ तो इतने सब बच्चों को देख अन्दर से आता कि यह कैसी प्रभु लीला है, जो इतने बच्चे पैदा हुए हैं। साकार बाबा के समय तक बहुत थोड़े बच्चे थे। अभी बहनें और भाई जैसेकि बराबर हैं तो यह अच्छा है, शान है। फायदा हुआ है, जैसा अन्न वैसा मन। जैसा संग वैसा रंग... इतने सब यहाँ इकट्ठे हुए हैं। इस प्रकार इतने बेहद परिवार के संगठन को देखने, मिलने में, बाबा को मिलने में, यहाँ का ब्रह्माभोजन खाने में ऐसे लगता है कि कितनी प्राप्ति है! बाबा की पालना, पढ़ाई और प्राप्ति इस संगम की जीवन यात्रा को बड़ा अच्छा सफल कर रही है। बाबा मेरा, मैं बाबा का - वण्डर है। यहाँ है बाबा, यहाँ है भाग्य। अन्दर बाबा की स्मृति से बहुत मजा आता है। अच्छा - ओके, ओम् शान्ति।

18-11-16

''एकाग्रता की शक्ति से बुद्धि में राइट टचिंग आती है, इसलिए जल्दी-जल्दी बोलने वा सोचने के बजाए धीरज को भी वैल्यु दो''

ओम् शान्ति। अटेन्शन प्लीज! मैं ओम् शान्ति कहने के बिगर क्या बताऊं, और कुछ आता नहीं है। मेरा बाबा कितना मीठा, कितना प्यारा है। बाबा ने ऐसा सहज ज्ञान योग सिखलाया है जो योग क्या है? जहाँ तन है, वहाँ मन है... धन की बात पीछे है पर यहाँ जहाँ तन है, वहाँ मन है। तन में होते हुए मन मेरा कहाँ है ... यह ज्ञान है विचार सागर मंथन करने का, अच्छा लगता है ज्ञान सागर बाबा ने ब्रह्माबाबा के मुख द्वारा कितना अच्छा ज्ञान दिया है। जैसे कहा जहाँ तन है, वहाँ मन है परन्तु मैं कहती हूँ मन में मंथन करना भी मनमनाभव, मामेकम् है। मन एक बाबा की याद में रहे तो बुद्धि शान्त, दिल खुश होता है। जब बुद्धि शान्त है, मन बाबा में लग गया तो उस घड़ी दिल को लगता है - मैं कौन, मेरा कौन! यह बहुत अच्छा लगता है तो ताकत आ जाती है तन और मन में।

जब मन बाबा में लगा हुआ है तो एकाग्रता की शक्ति से बुद्धि में उसी घड़ी राइट टचिंग आती है क्योंकि जल्दी-जल्दी बोलना, सोचना सयाने का काम नहीं है इसलिए धीरज को भी वैल्यू देना है, कोई टाइम धीरज नहीं होता है तो हरी, वरी, करी...। चिंता वाले जल्दी-जल्दी में कोई भी काम करते हैं तो उनसे कडुवेपन का अनुभव होता है। अभिमान वश समझता है मैं जो बोल रहा हूँ वह यह क्यों नहीं सुनता है? अगर हम योगयुक्त हैं तो कोई को धीरज से बताने से खुशी से स्वीकार करते हैं क्योंकि सारी लाइफ में देश विदेश के लाखों लोगों के कनेक्शन में आये हैं, तो जो भी कनेक्शन में आये हैं उन्हें वो दिन भूलते नहीं हैं। प्रेम से लेन-देन जो करते हैं, वो याद रहता है। मैं कौन हूँ, मेरा कौन है, मुझे क्या करने का है वो याद रहता है। मैं के स्वमान में रहने से मेरा कौन है, वो याद रहता है। फिर सामने जो सेवा है वह एक्यूरेट नेचुरल ऐसी होती है जो भुलाने से भूलती नहीं है।

बाबा की नॉलेज को धारण करने के लिये एक दो से अच्छी मदद मिलती है, कईयों में लिखने की बहुत अच्छी कला है। जगदीश भाई का मिसाल, उसमें लिखने की कितनी अच्छी कला थी। लण्डन में ऐसे ही नेविल भाई को भी बहुत लिखने का शौक है, बहुत अच्छी बुद्धि है। उसने मेरे ऊपर ही एक बुक लिखा है ''मैं जीती हूँ तो मुझे कैसे जीना है? अगर मर जाऊं तो ऐसे मरूँ...'' इस बारे में घड़ी-घड़ी पूछता रहा। तो मेरा भी अटेन्शन है, इतना समय जीने में सुख मिला इलाही है। ऐसे नहीं मैंने कभी दु:ख दिया है या लिया है। पूछती हूँ अपने आपको और आप सभी को भी प्रूछती हूँ कि किसी को मेरे से दु:ख मिला है? क्योंकि जब लोग कहते हैं ना मुझे आशीर्वाद दो, तो मैं प्यार से कहती हूँ आशीर्वाद मांगी नहीं जाती है, जिनको सुख मिलता है उनके दिल से

आशीर्वाद निकलती है। ये नेचुरल है ना, अगर मैंने कभी किसी को दु:ख नहीं दिया है और सबके साथ सुख का व्यवहार चलता आ रहा है, तो उनके दिल से दुआयें निकलती हैं। तो दुआयें देनी नहीं होती हैं, परन्तु व्यवहार ऐसा हो जो उन सबको रूहानी सच्चाई का प्यार मिले। इससे क्या प्राप्ति हो रही है वा क्या फीलिंग हो रही है या इससे क्या अनुभव हो रहा है! इस तरह सदा ही संगम के सुखों का लेन-देन करते रहना, यह कितना बड़ा भाग्य है! यहाँ बैठे हैं भाग्य बांटने के लिये, ठीक है! अच्छा, ओम् शान्ति।

19-11-16

''ज्ञान कहता है साक्षी होकर देखो, योग कहता है एक बाबा दूसरा न कोई, धारणा कहती है कभी भी आवाज़ से बात नहीं करना''

आप सब बहुत प्यारे, बहुत मीठे हो। और हमारी ईशू दादी को देखो तो बाबा की वो पुरानी यादें एकदम ताज़ी हो जाती हैं, बहुत सुख भासता है, खुशी होती है। कितना वन्डरफुल मेरा बाबा है और हरेक का अपना-अपना पार्ट है। मुझे अच्छा लगता है मेरी दादी दादी है और बाबा की राइट हैण्ड है। मैं भी राइट हैण्ड हूँ ना बाबा की, यह राइट है ना। हमें तो बाबा कभी कहाँ, कभी किसी सेवास्थानों पर भेजता रहा, पर ईशू दादी को कहीं नहीं भेजा, अपने बाजू में ही रखा क्योंकि सारे विश्व में जहाँ भी बाबा का पत्र जाता था, तो उसमें यह सब देखके भेजती थी, वो सीन वन्डरफुल थी। वो दिन कितने प्यारे जब बाबा साथ हमारे...। अष्ट रत्न में लाने के लिये बाबा ने साथ दिया, जिससे पुरुषार्थ करने में जो करेंट आयी, वह आप भी अभी अनुभव करो। आप सबसे मिलने में कितनी खुशी होती है, यह रचना जिसकी इतनी सुन्दर रचता कैसा है! रचयिता भले हमारे पीछे बैठा है, आपके सामने हैं। हम उसकी रचना को देख रहे हैं।

ऐसे कई भाई बहनें हैं जो कहीं पर भी रहते, बाबा की लगन में और आराम से रहते हैं। बाबा भी जब मेरे बच्चे कहता है, तो हमारी भी दिल कहती है, मैं भी आपकी हूँ आप मेरे हो। 80 साल हो गये बाबा मेरा, मैं बाबा की। एक बाप दूसरा न कोई तो कितने खुशनसीब हैं! जो हम बाबा के सदा करीब रहते हैं, नज़दीक रहते हैं इसलिये अपने जैसा पदमापदम भाग्यशाली कोई नहीं। जो समझते हैं ऐसा पदमापदम भाग्यशाली हैं वो हाथ उठाओ। अच्छा। बाबा ने जो बातें हमको सिखाई हैं ना वो बड़ा सहज राजयोग है, कोई कठिन नहीं है। जो ऐसे प्यारे बाबा के बच्चे हैं, बाबा मिला सब कुछ मिला इसलिये हम खुशनसीब हैं माना हमारे नसीब में खुशी ही खुशी है।

बाबा अभी यह प्रैक्टिस करा रहा है, हम अशरीरी बन जायें क्योंकि सतयुग में हम जब शरीर छोड़ेंगे ना तो बहुत अच्छा। उसके लिये अभी से ही यहाँ कभी भी कोई प्रकार का न दु:ख देना, न लेना इसमें फुल मार्क्स लेनी हैं। मैं साइलेंस में बोल रही हूँ ताकि आप समझ सको कि मैं जो कह रही हूँ वह राइट है? बाबा अपनी सेवा कराने के लिये भिन्न-भिन्न प्रकार से टेस्ट करवाता रहता है और उसमें सफलता भी दिलाता रहता है। तो बाबा अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया है इसलिये मैं कहती हूँ, मुखड़ा देख ले प्राणी अपने दर्पण में, अभी दर्पण साफ ऐसा हो जो अपना मुखड़ा देखें कि यह मुखड़ा सेवा कर रहा है? ज्ञान कहता है साक्षी होकर देखो। योग कहता है एक बाबा दूसरा न कोई। धारणा कहती है कभी भी आवाज़ से बात नहीं करना।

तो कहाँ भी रहो लेकिन ऐसे मीठे बनो, प्यारे बनो। प्रवृत्ति मे रहते बिल्कुल न्यारे बनो। न्यारे बनने के कारण बाबा के प्यारे बन गये। मुझे भी बाबा ने ऐसी सेवा दी है, जब जहाँ जहाँ बाबा ने सेवा पर भेजा है वहाँ भावना रही है हरेक बाबा का बच्चा प्रवृत्ति में रहते हुए पूरा ट्रस्टी बनकर रहे। बाबा से क्वेश्चन नहीं पूछते हैं कि बाबा कैसे रहूँ,

क्या करूँ? कौन है जो बाबा को यह कहता है क्या करूँ, कैसे करूँ? नहीं। बच्चे चलते चलो, चलने का नाम गाड़ी है। चलते चलो, चलते चलो। बाबा कहता है मैं तेरा हूँ, तू मेरे हो। तो बाबा को भी हमारे से अटैचमेंट है, वह हमारी बुद्धि का ऐसा खींच लेता है जो हमारा सारा कर्मबन्धन खलास हो जाता है। बाबा चाहता है बच्चे अपना कर्मबंधन खलास करके कर्मातीत स्थिति में आ जावें। कर्मातीत बनने के पहले विकर्माजीत बनना है। कोई प्रकार का भी विकर्म न हो। दूसरी बात कर्मों की गुह्यगति को जानो और मेरे को पहचानो। कर्मों की गुह्यगति को जानेंगे, विकर्माजीत बनेंगे, कर्मातीत बनेंगे तो मैं पलकों में बिठाकरके सारे विश्व में चक्का लगवा-ऊंगा। ऐसे बाबा बड़ा मेहरबान है यानी इतनी मेहरबानी है जो कर्मों की समझानी देता है। बाबा कहता है कोई भी जरा भी गलत काम नहीं करना क्योंकि कर्मों की गुह्यगति की पहचान बाबा ने दी है। मेरे कर्म अच्छे हैं तो खाता जमा हुआ। यह बड़ा ही सुन्दर संगठन है, प्यारा संगठन है।

20-11-16

''सदा सेफ रहो, साफ रहो, शान्त रहो, मुस्कराते रहो, और एक दो को रिगार्ड देने का रिकॉर्ड अच्छा रखो, तो अन्त मते सो गते अच्छी होगी''

आज सभी ने थर्ड सण्डे का अन्तर्राष्ट्रीय योग किया। ऐसे संगठन में योग करते समय मैं नहीं समझती हूँ कि किसी का मन कहीं और भटकता होगा! क्योंकि बाबा की याद बहुत मीठी प्यारी लगती है। बाबा की याद ने ही हमें सबसे न्यारा और बाबा का प्यारा बना दिया है। हरेक का पार्ट न्यारा है, दो एक से नहीं मिलते हैं। अभी बुद्धि बड़ी अच्छी है। मन तो शान्त है, पर बुद्धियोग से बल मिलता है। समय अनुसार कर्म करने का जो भाग्य मिलता है, यह यज्ञ सेवा बड़ी अच्छी लगती है।

एक दो को देख जी चाहता है यह भाग्य मिला है, मुझे भान आता है कई बार यहाँ बाबा मेरा साथी है, वो साथी बाबा बहुत अच्छा चला रहा है। चलो बच्ची आगे... और यहाँ मुझे भाग्य है, जो दिन भर में कई बाबा के बच्चे जब मिलने आते हैं तो जी चाहता है वायुमण्डल ऐसा अच्छा हो क्योंकि यह दृष्टि महासुखकारी है। मुझे बाबा बहुत अच्छा लगता है क्योंकि दृष्टि बहुत अच्छी देता है। जो भी बाबा हमको सिखाता है, यह नियम की जो सिस्टम बनी है यह और कोई धर्म वालों में नहीं है। मैं अमृतवेला कभी मिस नहीं करती हूँ, पर कमरे में ही करती हूँ। आप सब बाबा के बच्चे जो नियमों पर पक्के हैं ना, संगठन में बैठते हैं, वो अच्छा समझदार हैं। मैं यह समझती हूँ बाबा ने जो शिक्षा दी है और जो अपने को अच्छा लगता है, किसी भाई बहन के साथ बैठके फालतू बात नहीं की होगी। सेफ रहो, साफ रहो, शान्त रहो, मुस्कराते रहो, और एक दो को रिगार्ड देने का रिकॉर्ड अच्छा रखो, तो अन्त मते सो गते अच्छी होगी। मैं देखती हूँ कई भाई बहनें ऐसे हैं जो अपना रिकॉर्ड अच्छा रखने के लिये अपनी जीवन यात्रा सफल करते हैं। बाबा बच्चों का रिकार्ड देखता है। जो हम करते हैं वह सारे विश्व में वायब्रेशन जाते हैं, हम यहाँ भले शान्तिवन में बैठे हैं परन्तु हमारा स्वधर्म शान्त है। सच्चाई और प्रेम वाला है। शान्ति है तो प्रेम है, खुशी है। तो वायुमण्डल जहाँ जाओ, जहाँ बैठो बाबा ने अपना बनाके कैसे रहना है, बहुत अच्छा सिखाया है। अच्छा।

21-11-16

''संगमयुग पर भाग्यवान वह है जो सदा अच्छे ऊंचे श्रेष्ठ कर्म करता रहे क्योंकि कम ' बड़े बलवान हैं''

हरेक अपने आपको अच्छी तरह से देखो कि जो ज्ञान मिला, जितना ज्ञान है उतना ध्यान है अपने ऊपर? देह सहित देह से न्यारे बाप के प्यारे हैं! संगमयुग में बाबा हमारे साथ है, यह भान आता है ना। यह हमारा भाग्य है

जो हर कदम में, हर संकल्प में बाबा साथ है, यह अनुभव होता है। यह बाबा ने अभी ऐसी विधि सिखाई है, उससे हम राज़ी खुशी हैं। नाराज़ नहीं तो खुश हैं, खुश हैं तो नाराज़ नहीं। यह बाबा ने संगमयुग पर इशारे से ज्ञान समझाया है और बाबा के पास यह संगम का समय है, हमको क्या से क्या बनाने के लिये। एक दो से राज़ी है माना मैं आपसे राज़ी, आप मेरे से राज़ी हैं, तो यह बहुत बड़ा भाग्य है। मैं दिन रात यह जरुर चेक करती हूँ सारी लाइफ में... क्योंकि बाबा ने कर्म ऐसे सिखलाये हैं, जो कभी भी यह मुस्कराहट कम न हो जाये। इतना कर्म पर ध्यान दिया है। अभी भी ध्यान है और करना भी क्या है! यह इतना करते हैं तब बाबा का बनने से बहुत सुख मिला है, मिलता है। इसलिये ऐसा अटेन्शन रखो कि कोई टेन्शन वाली बात न रहे, कोई गलती न हो क्योंकि जैसे शिवबाबा सर्वशक्तिवान है, वैसे कर्म भी बड़े बलवान हैं इसलिये हम ऐसे अच्छे ऊंचे श्रेष्ठ कर्म करते रहें तब कहेंगे भाग्यवान, वो जिसका कर्म पर ध्यान हो क्योंकि कर्मभोग नहीं चाहिए इसलिए ऐसा कोई भूल से कर्म न हो जो भोगना भोगनी पड़े। एक शरीर से भोगना, दूसरा सम्बन्ध में भोगना, तीसरा स्वभाव से भोगना। किसी का स्वभाव ऐसा होता है तो जैसे दु:ख महसूस होता है। यह इतना थोड़ा अटेन्शन हो, न दु:ख देवें न दु:ख लेवें। अटेन्शन रखने से कभी भी हम दु:ख अपने में महसूस न करें, न कोई को दु:ख देवें। स्वभाव संस्कार में कभी आप देखते होंगे स्वप्न में भी किसी को दु:ख न मिले, न दु:ख ले लेवे।

बाबा कहता है एक अमृतवेला दूसरा यह नुमाशाम का समय, इसमें हम आपस में मिल करके जो लेन-देन करते हैं, समय सफल करते हैं। जिसका ज्ञान का चिंतन अच्छा है वो मुरली पढ़ते हैं, उनका मंथन अच्छा चलता है तो लाइफ हमारी सफल कैसे करनी है, कैसे हो रही है, वह हर एक अपने समय और स्वयं दोनों को देख रहे हैं। वाह बाबा वाह! वाह मेरा भाग्य! सतयुग में हम देवता बनेंगे, अभी फरिश्ता बनेंगे। बनेंगे ना फरिश्ते! कौन समझता है कि अभी हम फरिश्ता बनेंगे! बहुत अच्छा। फरिश्ता माना जिसका धरती पर कदम नहीं है, पदमों की कमाई कर रहे हैं, ओके। अच्छा। ओम् शान्ति।

23-11-16

''परमात्मा बाप की शक्ति से यह जीवन यात्रा सफल हुई है, सदा खुशी में रहते हैं''

(सर्व धर्म सम्मेलन में प्रवचन)

यहाँ पर ब्रह्माबाबा ने आत्मा, परमात्मा और कर्म फिलोसॉफी पर इतनी गहरी समझ दी है, अभी समय कैसा है, ऐसे समय पर उस पिता परमात्मा की याद में रहके कर्म करने से न कभी किसी को दु:ख देंगे, न किसी से दु:ख लेंगे क्योंकि परमात्मा बाप ने ऐसे कर्म सिखलाये हैं, पूरे जीवन में कोई भी कारण से तकलीफ हो शरीर को हो या शरीर के सम्बन्ध से हो, कोई भी प्रकार का कारण हो परन्तु यह एक परमात्मा बाप की शक्ति है, प्यार है और बाप की जो अच्छी बातें हैं, वो भूले नहीं और जो काम की बात नहीं है वो याद न आये। ऐसी अच्छी-अच्छी बातें बाप ने सुनाई है जिससे जीवन यात्रा सफल हुई है और सदा के लिये खुशी में रहते हैं। तो मैं कौन? मेरा कौन? मुझे क्या करने का है? इससे इतनी शक्ति आती है, जो बाबा भी खुश, हम भी खुश, आप भी खुश। सब खुश हैं ना। मैं तो आप सभी को देख बहुत खुशी में हूँ। एक परमात्मा के सब बच्चे लाइट माइट लेते लाइट हाउस का काम कर रहे हैं यानी जहाँ भी आप जायेंगे, आपको देखें यह कौन हैं, किसके हैं, यह पूछने लग जायें। परमात्मा बाप ने ब्रह्मा बाबा के द्वारा निरंहकारी, निर्विकारी, निराकारी स्थिति में रहना सिखाया है।

अभी हमें साकारी से निराकारी घर में जाके फिर वापिस सतयुगी नई दुनिया में आना है, उसके लिए श्रेष्ठ कर्म ऐसा हो जो सतयुग में पांव रख सकें। यह समय संगमयुग का है, अभी इस दुनिया में जो अत्याचार, पापाचार, भ्रष्टाचार फैला हुआ है, वह सब खत्म हो जाए। तो इस पृथ्वी पर जल्दी ही वह श्रेष्ठाचारी अच्छी सतयुगी दुनिया

आ जायेगी। इसके लिये अभी इस सृष्टि पर रहते ऐसे कर्म करने हैं जो निर्विकारी रहें। काम नहीं, क्रोध नहीं, लोभ, मोह भी न हो, नहीं तो चाहिए चाहिए की पूँछ लगी रहेगी, इससे भगवान ने हमको बचाके रखा है। पूरे संसार में सेवा के लिये चक्कर लगाया, पर मेरे हाथ में कोई पैसा नहीं है, यह इतनी शिवबाबा की मदद है सफेद कपड़ा खीसा खाली हम हैं विश्व के माली.. तो सहज है ना। सारे विश्व में चक्कर लगाते बाबा ने बहुत मदद किया। परमात्मा बाप की मदद लेने के लिये जो परमात्मा कहते हैं वो करना है, बस। ओके. ओम् शान्ति।

23-11-16

''भाग्यवान वह है जो नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा है, मोह माया खतरनाक है वह ईश्वर को याद करने नहीं देगी''

ज्ञान क्या है, मैं कौन हूँ, योग क्या है? मेरा कौन है। बहुत सिम्पल है, सहज है, राजयोग सहजयोग है। कर्मयोग भी है, प्रवृत्ति में रहते हुए न्यारे और प्यारे, हमारी लाइफ भगवान ने ऐसी बनाई है जो सिवाए बाबा के और कुछ नज़र नहीं आता है। भगवान भी इशारे से समझता है ना, कर्म ऐसे करो जो यह स्मृति रहे जैसा कर्म मैं करेगी मेरे को देख और करेंगे। सिम्पल रहने का सैम्पल बनें। मैं आत्मा हूँ और परमात्मा की सन्तान हूँ, तो यह सब करना सहज लगेगा और संस्कार भी ऐसे बनेंगे। बुद्धि भी अच्छा काम करेगी, मन भी शान्ति से रहेगा। तो यह बाबा निमित्त है, इसके थ्रू उस ऊपर वाले बाप को याद करना है। ऊपर वाला भोलानाथ शिव है। भले हम कोई भूल करें तो भी वो रहम कर देता है, तो हमारे दिल में मजबूती आ जाती है क्योंकि कोई भूल हम न करें, उसके लिये इतना प्यार देता है, संग भी देता है और कर्म कैसे और क्या करने का है, उसकी समझ भी देता है। हम जितना मर्यादाओं में रहेंगे उतना अच्छे संस्कार होंगे।

इतनी सब वैराइटी आत्माओं का बाबा के घर आना और दिल से मेरा बाबा कहना क्योंकि बाबा मेरा है, बाबा कहता है तू मेरा बच्चा है ना। इससे माया से स्वत: ही छूट गये तो फ्री हो गये। मोह माया खतरनाक है, वो कभी ईश्वर को याद करने नहीं देगी इसलिये हमारा काम है अन्त मते सो गते की बात ध्यान में रखते हुए जीवन जीना चाहिए। भाग्यवान वो जो नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा है। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी, हिम्मते बच्चे मददे बाप। बाप को याद करना और रोज़ाना यहाँ शाम की सभा में हाज़िर होना यह संस्कार बन गये हैं, तो यह भी एक शान है। यहाँ अन्दर बाहर की सच्चाई सफाई और सादगी है। अच्छी और ऊंची बातें करने के संस्कार बन गये हैं। यह जीवन यात्रा प्रभु के घर में सफल हो जाये तो और क्या चाहिए। ऐसी अच्छी और ऊंची बातें करने का सोचो तो भी भगवान प्रैक्टिकल मदद करके लाइफ बना देता है। लेकिन उसके लिये आप भी हमारे जैसे काका, चाचा, मामा से न्यारे बनो तो प्रभु के प्यारे बनेंगे। ओके।

24-11-16

''पहले एक कदम उठाओ फिर बिन्दी लगाओ तो बिन्दी लगाने से 10 गुणा, 100 गुणा हो जायेगा''

न दु:ख दो, न दु:ख लो, यह भगवान ने जो गिफ्ट दी है, उसको अच्छी तरह से सम्भालके रखा है, तभी सत्यता और धैर्यता के द्वारा सुख शान्ति से जीवन जी रहे हैं। परमात्मा ने सच्चाई का बीज ऐसे डाला है जिसकी रिजल्ट आज यह सभा देख रही हूँ। मैं वन्डर खा रही हूँ, यह कितनी मेहरबानी है, मेरे बाबा की। और बाबा कभी नहीं कहेगा मैं करता हूँ, कराने वाला स्वयं भगवान है और सबसे अच्छी बात तो यह है कि हर धर्म में थोड़ा बन्धन है। कोई न कोई प्रकार का धर्म का बन्धन है लेकिन हमारे यहाँ जाति धर्म का कोई बन्धन नहीं है। भगवान

ने हमको बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त बनने के लिये अटेन्शन खिंचवाया है। टेन्शन नहीं है, कभी भी कोई बात का, क्योंकि अटेन्शन है कि मेरे से कोई भी समय गलती न हो। किसकी हूँ? कौन हूँ? क्या कर रही हूँ? मेरे बहन भाई बैठे हैं, हम क्या करते हैं सारा दिन थोड़ा देखो और सोचो। बाबा के पास आने से बाबा मिला तो सब कुछ मिला। बाप भी कौन है, यह जब पहचान हो गयी तो ऑख खुली तो त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी और तीनों लोकों के मालिक हैं, यह प्रैक्टिकल लाइफ है। साकार में होते हुए आकारी रूप में रहना है और निराकारी दुनिया में जाके फिर सतयुग में आना है इसलिए सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी मर्यादा पुरुषोत्तम बनना है।

हम सदैव बाबा को और बाबा की बातों को ही देखते सुनते रहें, हम अपनी गलतियों को देखे हीं नहीं पर चली जावें। आप माया माया माया का शब्द सुनते होंगे, माया माना पाँच विकार काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार यह 5 विकार क्या करते हैं? मनुष्य को अधीन बनाते हैं। तो परमात्मा बाप ने इतनी शक्ति दी है जो पांच विकार बिचारे हो गये हैं। हमारे नज़दीक भी नहीं आ सकते हैं, छोड़ो तो छूटे। तो हमने तो अन्दर खोलके अपने आपको देखा है कि मैं कौन हूँ, किसकी हूँ, क्या कर रही हूँ... बस। आप कहेंगे कल रात को यह बात हुई थी पर मुझे याद नहीं है। सुबह को यह बात की थी, मुझे वो भी याद नहीं पर अब क्या करने का है वो याद है या कल क्या करने का है, वह भी कल देखा जायेगा। कई शब्द ऐसे अच्छे हैं जैसे सच तो बिठो नच। सच्चाई चला रही है, यह सब भगवान के घर में बैठे हैं, बड़े खुशनसीब हैं। आप सब हरेक को यही भासना आती है ना कि भावना और भासना ऐसी हो जो दिल को वो मिलना वा बोलना खुश कर जाये। दिल की भावना बहुत काम करती है और इसके लिये कोई खर्चा नहीं है।

हर एक आत्मा परमात्मा का बच्चा है, अभी सच की दुनिया में जाने के लिये, झूठ को खत्म करने के लिये भगवान को साथी बनाया है। भगवान हमारा साथी है तो उसने भी हमको अपना साथी बनाके सेवाधारी बना दिया है। हम सेवाधारी हैं, क्या सेवा करते हैं? एक को याद करो बिन्दी लगाओ तो 10 गुणा फायदा हो जाता है। दूसरी बिन्दी लगाओ 100 गुणा फायदा हो जाता है, परन्तु बिन्दी के पहले एक कदम आपका जरुरी है। नहीं तो पहले बिन्दी लगाने से कुछ नहीं होगा फिर कहेंगे यह क्या हुआ? कैसे हुआ? क्यों की क्यू में मुझे खड़ा नहीं होना है। बिन्दी लगाओ तो कमाई है, इससे समय भी सफल होता है। तो यह मिलन बहुत मीठा है, प्यारा है। बाकी सब बातें जो भी हैं बीती को चितओ नहीं आगे की न रखो आश। बाबा ने ऐसी ऐसी अच्छी अच्छी विधियां सिखाई हैं जिससे फ्री, केयरफ्री। केयर भी करते हैं, शेयर भी करते हैं। जो बाबा ने सिखाया है वो सबके सामने शेयर करते हैं। भगवान ने अपना बनाकरके हमको ऐसे बनाया है, सदा खुश। तो हमारे पास खुशी जैसी खुराक नहीं, चिंता करना आता ही नहीं। किसकी करें, क्यों करें? ओके।

25-11-16

''पीस से पावर और पावर से पीस पैदा होती है, वायुमण्डल शक्तिशाली बनता है''

मैं कौन हूँ, मेरा कौन है और यह सब मेरे बहन भाई है, सब उसके बच्चे हैं, इजी है यह समझना और प्रैक्टिकल जीवन में सदा खुश रहना। अन्दर ही अन्दर जितनी है प्यूरिटी उतनी है पीस और उतनी ही पॉवर। अभी देखो पीस में पॉवर है या पॉवर में पीस है! पॉवर है तो पीस है। नहीं तो पीस कहाँ रहे बिचारों में। थोड़ा कोई भी वेस्ट संकल्प नहीं आ सकते हैं इतनी पॉवर है, एक मिनट के लिये सब पीस को यहाँ रखो, पॉवर अपने आप काम कर रही है। यहाँ है मेरा भगवान, यहाँ है मेरा भाग्य। भगवान मेरा साथी है तो मैं पीसफुल हूँ फिर भाग्य में मेरे पॉवर कैसे आ रही है, वन्डरफुल। इतनी थोड़े समय के मिलन में कितनी पॉवर है, यह मिलन जो है ना, पीस

एण्ड पॉवर। पीस से पॉवर पैदा होती है और वह पॉवरफुल वायुमण्डल अच्छा काम करता है। पीस है तो पॉवर है, पॉवर है तो पीस है। इज़ी राजयोग है। मेहनत नहीं है।

फिर कहते हैं कराने वाला करा रहा है। हरेक अपने आपसे पूछे कराने वाला क्या करा रहा है? समय और संकल्प अच्छा काम कर रहा है। अभी यह जो समय है, संकल्प जो पॉवरफुल हैं वह अच्छा काम कर रहे हैं। कराने वाला कहाँ रहता है, वो कौन है, जानते हो? ऊपर रहता है। हम भी देख सकते हैं, क्या करता है, कैसे करता है। ऊपर में जहाँ रहता है वहाँ से क्या करता है, हम यहाँ बैठे हैं वो ऊपर बैठा है। हमारी अन्दर से कोई इच्छा ममता नहीं है। हमें कुछ चाहिए नहीं। परन्तु वह वन्डरफुल है ज्ञान का सागर है, प्रेम का सागर है, शान्ति का सागर है। सागर है एकदम। आनन्द का सागर है, तो सागर से हम क्या करेंगे! जब सागर पर जाकर बैठते हैं तो दूर दूर तक आसमान ही दिखाई पड़ता है। अभी चलो सागर के पास, हम यहाँ बैठे हैं सागर को देख रहे हैं दूर दूर दूर... तो कुछ दिखाई नहीं पड़ता है। तो परमात्मा बाप ने ऐसी समझ दी है। यह समय ऐसा है, वो ऐसी समझ दे रहा है, तो जी चाहता है आप सब जैसे वो समझा रहा है वो समझ यूज़ करो, तो आपको भी यह ड्रामा बहुत अच्छा लगेगा क्योंकि इस ड्रामा की हर सीन अति न्यारी और बड़ी प्यारी है।

26-11-16

''वाचा सेवा बहुत की अब मन्सा से सेवा करनी है, इसके लिए मन्सा में सच्चाई और प्रेम कूट-कूट कर भरा हो''

जहाँ बाबा बिठाये, जहाँ परिवार का स्नेह है। मुझे गैरंटी है ईश्वरीय स्नेह में सम्पन्न बनना आसान है। हमारे में कोई कमी न रहे क्योंकि जहाँ तहाँ यहाँ बाबा सामने है, मुखड़ा देख ले प्राणी दर्पण में। बाबा दर्पण है ना, वन्डरफुल है। सभी धर्मों के पिता शिव परमात्मा हैं और आज मुझे ब्रह्माबाबा की ऐसी प्यार भरी याद आ रही है जो कहता है हम सब मिल करके एक हो जायें। जैसे अभी सब समझ गये हैं मैं तीन बारी ओम् शान्ति क्यों कहती हूँ? मैं कौन हूँ, मेरा कौन है फिर क्या बोलूँ, क्या करूँ...। यहाँ आके लाइट माइट होके याद में बैठने में कितना अच्छा भाग्य मिलता है। बाबा ने यह जो हम बच्चों को बड़ा अच्छा तरीका सिखाया है, जो बाबा की याद में तो रहूँ, सभी को याद खींचे।

पीस शब्द जो है वह इतना अच्छा है जो उनमें पॉवर पैदा हो जाती है, वो पॉवर मायाजीत, जगतजीत बना देती है। माया क्या है, कैसी है, ऐसे है छोटी-सी परन्तु नाटक दिखाने वाली है, माया नाटक ऐसा दिखाती है जो कभी कभी कोई मैं क्या बोलूँ... अच्छा नहीं लगता है पर तरस पड़ता है। पॉवर नहीं है पीसफुल रहने की। पीसफुल रहने से जैसे नॉलेजफुल हैं, अन्दर में दिन रात बार-बार यह पॉवर काम करती है पीसफुल रहने के लिये। कभी आवाज से बात करना, अपनी बात को सिद्ध करना... मतलब कई ऐसे बातें हैं जिनसे मैं फ्री हूँ। एक के नाम से काम चल रहा है, 80 वर्ष हुए ब्रह्माकुमारी बनें, पर मेरे को कोई प्रॉब्लम नहीं आयी है। कई ऐसी अच्छी मीठी आत्मायें हैं जो अन्दर ही अन्दर संकल्प खींच लेती हैं। ऐसे वफादार, इमानदार बच्चा बनने से सुख मिला है इलाही... कभी भी वो उदास दिखाई नहीं पड़ेंगे। उनकी याद आते, उन्हें देखते ही खुशी होती है।

अभी तक स्थूल में वाचा से सेवा बहुत की, अब संकल्प से सेवा करनी है। संकल्प आया और बाबा का कार्य हुआ। तो यह भी बाबा की कमाल कहेंगे जो सच्चाई और प्रेम ऐसे कूट-कूटके डाल दिया है। कोई कोई भाई बहनें बड़ी मेहनत करते हैं और कोई बिना मेहनत के मुफ्तलाल कंपनी में बैठे हैं। यहाँ बैठने से दिलखुश मिठाई मिलती है। बाबा का बनने से सुख मिलता इलाही है, यह सिर्फ गीत नहीं है पर प्रैक्टिकल है। जो समझते हैं सारी लाइफ में मुझे सुख मिला है हाथ उठाओ। अच्छा।

27-11-16

''संगमयुग पर जब हम भगवान के गले का हार हैं, वह हमारा साथी है तो अपने समय और संकल्प को सफल करो''

तीन बारी ओम् शान्ति का जो डीप रहस्य है, वह कभी भूलता नहीं है। मैं कौन, मेरा कौन? बस। मेरा है सर्वशक्तिवान, जब मैं अशरीरी स्थिति में हूँ, देह से न्यारी हूँ तो बाबा का प्यार नेचुरल अपने आप आत्मा खींच लेती है। संगमयुग है, बाबा हमारे साथ है। हम भगवान के गले का हार हैं। भगवान के दिल तख्त पर बैठे हो या गले का हार बनके बैठे हो? जब गले में माला पड़ी हुई होती है तो अच्छा लगता है ना। मतलब बात का यह है, कैसे हमारा समय, संकल्प सफल हो रहा है। यह मंत्र जपने वाला नहीं है परन्तु प्रैक्टिकल लाइफ में मैं कौन? मेरा कौन? शान्ति से शक्ति आ जाती है क्योंकि वैसे दुनिया का वायुमण्डल अच्छा नहीं है। परन्तु योगयुक्त रहकर ऐसा अच्छा वातावरण बनाके रखने से अच्छा लगता है।

पहले तो यह शान्तिवन भी एकदम जंगल था पर जब यहाँ इतने सारे भवन और कितने विभाग बने, उनसे कितनी सेवायें हो रही हैं, तो उन सबके संग में रहते वायब्रेशन्स, वातावरण और वायुण्मडल कितना अच्छा हो गया है जो सबको आकर्षित करता है। यह मिलन बहुत वैल्युबूल है। कोई इसके पक्के नियमी हैं, कभी मिस नहीं करेंगे, तो हमको भी खींच होती है यहाँ आने की। मतलब बात का यह है जितना संगठन का फायदा उठाना हो, ईश्वरीय स्नेह का, सच्चाई का उतना उठा सकते हैं। यहाँ कोई भी मिक्सचर बातें नहीं हैं। यहाँ जो भोजन भी बनता है उसको भोग लगाया जाता है। बाबा की पहचान मिलने के बाद, याद में रह कर अपने आपको बदलना बहुत फायदे वाला है। तो आप सबने भी अपनी लाइफ को बाबा की दिल पसन्द बनाया है ना। अच्छा।

28-11-16

''संगम पर 84 जन्मों की कमाई बाबा करा रहा है, इसलिए यज्ञ की कोई न कोई सेवा जरूर करनी चाहिए''

इतने सब शान्त में बैठे हो या खुशी में बैठे हो! शान्ति है तो खुशी भी है और अन्दर से मेरा ये आवाज निकलता है शान्ति चाहे खुशी तभी मिलती है जब सच्चाई है। तन से यहाँ बैठे हैं, मन बाबा के साथ है। इतनी सारी सभा में अभी मन बिचारा कहीं भटकता नहीं है। यहाँ आके बैठ जाना कितनी कमाई है! कमाई अभी जो संगम पर है फिर सारे कल्प में यह चांस नहीं मिलेगा। तो सभी खुश है ना। खुश हैं तो बस और क्या चाहिए क्योंकि संगमयुग बहुत अच्छा है। 84 जन्मों की कमाई यहाँ संगम पर बाबा करा रहा है। मैं कौन, मेरा कौन, इसमें ही मेरा जो सर्वशक्तिवान बाबा है ना, बहुत अच्छा है। यहाँ बाबा चारों ही सबजेक्ट में अटेन्शन दिलाता है, तो सबका अटेन्शन है मैं यह समझती हूँ। ज्ञान, योग, धारणा, सेवा यह चारों ही बातें दिल व जान से, अति प्रेम से कोई न कोई कुछ न कुछ करते होंगे। इसमें कोई बहाना नहीं दे सकता है, हरेक कुछ तो कर ही सकते हैं क्योंकि इस महायज्ञ में बहुत सेवायें हैं, उसमें से अगर कुछ भी नहीं करते तो खाना भी अच्छा नहीं लगता है। कोई न कोई सेवा सुबह से रात तक करना चाहिए। इसमें कोई बाबा के बच्चे बहुत अच्छे हैं। संगमयुग का फायदा लेने की कोई न कोई विधि निकालते हैं। जैसे सुना कि कल कोई एक ग्रुप ने रात भर भट्ठी की है, यह भी अच्छी बात है ना। शान्ति प्रिय वायुमण्डल बहुत अच्छा लगता है। वायब्रेशन भी यहाँ से सारे विश्व में फैलते हैं।

30-11-16

''जो सच्चे हैं वह निर्भय और निर्वैर हैं, उनका किसी से वैर नहीं, वे सदा खुशी में नाचते हैं''

संगठन में ओम् शान्ति कहने से कितना अच्छा पावरफुल वायुमण्डल बन जाता है। मैं कौन, मेरा कौन, मैं आत्मा देह से न्यारी, बाप की प्यारी तो यह दृष्टि, वृत्ति, स्मृति तीनों में एक बाबा ही है, वृत्ति में है यह सब मेरे बहन भाई हैं, तो दृष्टि में बाबा और हम बच्चे लाइट और माइट, जितना हल्के रहते हैं उतनी माइट वायुमण्डल को पॉवरफुल बनाने के लिये वन्डरफुल काम करती है। वन्डरफुल बाबा है, जो 84 जन्मों का सारा हिसाब-किताब हम बच्चों को ऐसा बताता है जिससे बहुत खुशी होती है। हम खुद को देखते, फिर एक दो को देखते तो सारे चक्र के आदि मध्य अन्त की नॉलेज बुद्धि में ऐसे घूमती है, जो समझते हैं कि यह जो समय है ना वन्डरफुल है। हम एक दो को देखते हैं, तो दृष्टि वृत्ति स्मृति में नैचरल लाइट हैं। सभी ऐसे समझते हैं हम कितने लाइट है! दिल में देखते हैं तो बाबा की याद ही आती है। कमाल है बाबा की कैसे अपनी आकर्षण से न्यारा बनाके प्यार दे रहा है। बहुत सहज है, न्यारे बनके बाबा से प्यार खींचना।

हम लोगों को कोई और काम तो है ही नहीं। हम सब नैचुरल योगी और एक दो के सहयोगी हैं। जब सहयोगी शब्द कहते हैं तो बड़ा अच्छा लगता है। मीठे प्यारे बाबा ने अभी शान्ति प्रेम में सच्चाई इतनी भर दी है, जो सिन्धी में कहते हैं सच तो बिठो नच। सच्चे हैं तो अपने आप मन खुशी में नाच उठेगा। एक एक बाबा का बच्चा कितना देह से न्यारा रहता है, न कहाँ चटके हैं, न अटके हैं, न लटके हैं। इतने फ्री हैं हम। सच्चे बच्चे हैं बाबा के, मैं सच्चाई देखती हूँ ना, तो निर्भय निर्वैर... किसी से वैर नहीं है, कोई प्रकार का भी। बाबा हमारी नेचुरल ऐसी स्थिति बना रहे हैं।

जब शुरु शुरू में हम बाबा के बने थे, बाबा खुद पहले समर्पण हुआ, दूसरे दिन मैं भी लौकिक बाप यहाँ, यह बाबा यहाँ, सामने बाबा को देख सूक्ष्म संकल्प में आया यह मेरा बाबा नहीं है, यह मेरा बाबा है। वो दिन आज का दिन, दिल कहता है ऐसा बाबा कल्प में एक ही बारी मिलता है। ल बाबा को सामने देख दिल करता है, बाबा तुम्हें देखती रहूँ... देखने से क्या होता है! मुँह में बाबा खिलाता है, जैसा अन्न वैसा मन और मुरली सुनाता है, जिससे हमारे कान बड़े अच्छे हो गये हैं। फिर दृष्टि ऐसी देता है। पाण्डव भवन में बाबा के दिनों में हिस्ट्री हॉल बना था। उसमें झाड़, गोला, त्रिमूर्ति के बड़े बड़े चित्र बाबा ने बनवाकर लगाये थे। बाबा कहते थे बच्चे रात को जागकर इन चित्रों के सामने बैठ जाओ। नॉलेज चिंतन मंथन से बुद्धि में एक्यूरेट हो। बाबा ने झाड़ का, चक्र का ज्ञान देना शुरू कर दिया। तो जैसे बाबा ने अच्छी तरह से नॉलेज का सिमरण करना सिखाया है, ऐसे अच्छे चिंतन में रहने से कोई फालतू ख्याल आ नहीं सकता, आता ही नहीं। बड़ा भाग्य है कि बाबा के साथ ऊपर जाना है फिर नीचे आना है। बाबा स्वयं बैठके ऐसे समझाता था जो दिल कहता था वन्डरफुल हमारा भाग्य है, अभी भी बाबा ऐसे ही समझा रहा है। अच्छा - ओम् शान्ति।